मैं नहीं समझता हूँ कि इन साधु,संत,महात्मा या गुरुओं को कोई "आप सब कुछ जानते हो" ऐसे कह सकते होंगे। बाकी कृपा–आशीर्वाद बहुत माँगते हैं और यहाँ बाप से(को) जब कोई लिखते हैं– बाबा, शक्ति प्रदान करो या कृपा करो, आशीर्वाद करो, आप जानी–जाननहार हो, फलाना, ये सब भक्ति है; क्योंकि बच्चे जब बाप को होते हैं तो उनको यह मालूम है कि हमको यह वर्सा पाना है और पुरुषार्थ करना है। कुछ भी माँगना नहीं है। आशीर्वाद या शक्ति माँगी नहीं जाती है; क्योंकि बाप तो अच्छी तरह से समझाते हैं कि याद में रहने से तुमको शक्ति मिलेगी। इसमें बाबा (की कृपा) तो कोई है नहीं। पढ़ेंगे, योग रखेंगे, अच्छी तरह से धारण करेंगे तो जैसे अपने ऊपर कृपा करते हो। यहाँ आशीर्वाद और कृपा माँगने की दरकार नहीं रहती है। तो नए–2 भगत हिरे हुए हैं। बाप को भी कृपा, फलाने को भी कृपा, बड़े आदमियों की कृपा, महात्माओं को भी कृपा–आशीर्वाद। वास्तव में यहाँ बच्चों को सब कुछ अपने ऊपर आपे ही करना है। मेरे से कोई भी बेकायदे काम तो नहीं होता है ! अगर होता है, खाता है तो फिर वो काम न करना है। अगर किया है तो बाप को लिख देना है। लिखने से ही जैसे अपने ऊपर कृपा करते हैं, आशीर्वाद करते हैं। न लिखने से गोया अपने ऊपर अकृपा अथवा आशीर्वाद नहीं करते हैं, और ही अपन को नुकसान पहुँचाते हैं। इनमें बाप कहते ही हैं, बाप को याद करो और वर्से को याद करो। मन्मनाभव, मद्याजीभव– संस्कृत के ये अक्षर ठीक हैं। अब बाप समझाते हैं तो हिन्दी में ही समझाते हैं। संस्कृत में समझाने वाला हो तो तुम एक भी यहाँ नहीं रहो। संस्कृत लैंग्वेज में इतनी समझानी आए कहाँ से! एक–2 संस्कृत सीखने लगे तो बिचारे <u>आज</u> ही चले जाएँ। ज्ञान मिला हुआ है, (इससे) समझ बहुत अच्छी मिल जाती है। बाप द्वारा जब तलक ज्ञान नहीं मिले तो मनुष्य जैसे बिल्कुल ही बेसमझ है। सो भी बाप को अभी जानते हैं जबकि बाप वर्सा देने आए हैं और जानते हैं कि उनकी मत पर चलने से....। मत पर ज़रूर चलना है, तभी बेड़ा पार हो सकता है। अगर मत पर नहीं चलेंगे या डरते रहेंगे। ...ऐसे न कोई कहे जो मुझे न करना पड़े तो वो भी गिर पड़ते हैं। श्रीमत देती है हमेशा सर्विस के लिए कि जाओ, कोई का कल्याण करो। (करेगा) वही जो पहले अपना कल्याण किया हुआ होगा, अच्छी तरह से धारणा किया होगा। अगर धारणा न किया होगा तो औरों को धारणा भी नहीं करा सकते हैं तो कोई का कल्याण भी नहीं कर सकते हैं। प्रजा बहुत बनानी पड़ती है। जो प्रजा बहुत बनाते हैं वो अच्छा पद पाते हैं। यूँ तो जो प्रजा (नहीं) बनाते हैं उनको भी पद तो मिलना ही है, जब तलक बाप का है; परन्तु वो तो हल्का पद मिलता है। पीछे बहुत मिलेगा। अच्छा, चलते,फिरते,उठते,कोशिश कर–करके जो भी टाइम मिले बाप को और वर्से को याद करने से खुशी का पारा अच्छा चढ़ेगा। फिर भी पढ़ने से अर्थ नहीं समझेंगे कि राजाओं के राजा का अर्थ क्या है। तुम बच्चों की बुद्धि में ये बैठता है कि बरोबर हम पवित्र बनते हैं, पीछे जो दूसरे होते हैं वो अपवित्र होते हैं और फिर ये भी बुद्धि में आता है कि हम ही सो राजा बनते हैं, महाराजा बनते हैं, हम ही सो फिर पतित महाराजा बनते हैं, हम ही सो फिर पतित राजा बनते हैं। ये भी बुद्धि में बैठता है। नहीं तो कोई ऐसे नहीं है कि हम नीचे वाले राजाएँ नहीं बनते हैं। नहीं, वो भी बनते हैं। सिंगल ताज वाले भी बनते हैं। लिखा भी हुआ है उसमें सो 84 जन्म के(में) द्वापर के बाद फिर सिंगल ताज वाली राजाई भी मिलती है। बस, पक्का यह कराना है कि ईश्वर तो एक ही ठहरा ना। तो इसमें फिर गीता का भगवान कृष्ण है, फलाना है, वो भी नहीं चल सके; क्योंकि भगवान तो एक ही है। फिर अगर गीता के ऊपर पढ़ा हुआ है तो भी पूछना चाहिए; क्योंकि वो आदमी बॉम्बे की प्रदर्शनी से निकला हुआ है। अहमदाबाद का है। ....किसको समझाने में और दान करने में भी मज़ा आता है। यह भी नॉलेज है बड़ा साहूकार बनने के लिए...। ... खज़ाने मिलते हैं ऐसे कहते हैं या वो हिन्दुस्तानी लोग उर्दू में कारून के खजाने कहते हैं। (जो) पक्के–3 हो जाते हैं (उनको) तो एकदम अच्छी तरह से सदैव दिल में रहता है अब यह नाटक पूरा होता है, हम जाते हैं वापस। अभी विनाश होने का है ज़रूर। नाटक पूरा (होना) ही विनाश को कहा जाता है। अभी जाना है और बाबा के साथ हम अपनी राजधानी स्थापना कर रहे हैं। बाबा के साथ ही फिर चले जाएँगे राजधानी स्थापन करने, फिर बाबा तो नहीं आएँगे, हम तो आएँगे। ये भी 10/20 दफा रोज़–2 अपने साथ करते रहें (तो) बड़ा खुश मिज़ाज़ रहें। ...वर्सा मिला था, अभी छीना गया है। अब फिर बाप से वर्सा लेना है। रावण ने छीना है, राम फिर आया है रामराज्य देने। (म्युज़िक बजा) हाँ! मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता का यादप्यार और गुडनाइट।